सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लक्ष्य —
(Aims of Teaching Social Studies)

प्रत्येक विषय के लक्ष्य सामान्य शिक्षा के आधार पर निर्धारित किये जाते है। शिक्षा के लक्ष्यो की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नही हो सकती है। प्रत्येक विषय किसी न किसी रूप में उनकी प्राप्ति में सहायक होता है। इसी कारण इसको पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाता है। इसके प्रमुख लक्ष्यों का विवरण निम्नलिखित है —

(1.) उत्तम नागरिकता का विकास
(Development of good citizenship)

सामाजिक अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य उत्तम नागरिकता को विकसित करना माना जाता है उत्तम नागरिक सदैव एक आदर्श रूप होगा उत्तम नागरिकता के अग्रलिखित गुणों का होना आवश्यक है

(i) लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों का विकास तथा दैनिक जीवन मे उनका प्रयोग।

(ii) परिवर्तित विश्व में प्रभावकारी जीवन के लिये महत्वपूर्ण निर्णय करने की योग्यता

(iii) दूसरे मानवों की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता

(iv) जीवन के नवीन ढंगों, नवीन तथ्यों तथा नवीन विचारों के लिये ग्रहणशीलता।

2) सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान (Knowledge of Social Heritage and Problems)

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का एक और लक्ष्य छात्रों को सामाजिक विरासत एवं सामाजिक समस्याओं का ज्ञान प्रदान करना है

3) विभिन्न वृत्तियों तथा कौशलों का विकास (Development of Different Skills and Attitudes)

सामाजिक अध्ययन का एक लक्ष्य छात्रों में विभिन्न वृत्तियों एवं कुशलताओं का विकास करना है

जिनसे वे सफल सामाजिक जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो सकें।

(4.) वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the Present) — सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का एक अन्य लक्ष्य वर्तमान को स्पष्ट करना है। वह ऐसा आधुनिक विश्व तथा उसकी समस्या का ~~ज्ञान~~ ज्ञान प्रदान करके करता है।

जेम्स हेमिंग ने लिखा है, "सामाजिक अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य वर्तमान समस्याओं की उचित समझदारी प्रदान करना है।"

(5) अपनेपन की भावना का विकास (Development of Sinse of Belongingness) — सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के प्रमुख लक्ष्यों में से एक लक्ष्य छात्रों में अपनेपन की भावना को विकसित करना है।

6.) अन्तरराष्ट्रीय सद्भावना का विकास Development of International Understanding) — सामाजिक अध्ययन-शिक्षण का एक लक्ष्य अन्तरराष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करना है

एडमस वेस्ले ने लिखा है कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षण द्वारा हमें वे उन शक्तियों का विकास किया जाना है जो विश्व शान्ति स्थापित करने में सहायता प्रदान करती हैं।

(7.) परस्परावलम्बन की भावना का विकास (Development of the feeling of Inter-dependence) — सामाजिक अध्ययन शिक्षण का एक अन्य लक्ष्य हमें परस्परावलम्बन की भावना का विकास करना है।

(8) सामाजिक चरित्र का विकास (Development of social character)

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है" उसका विकास शून्य में नहीं हो सकता है। वह समाज में ही जन्म लेता है और रहकर अपनी उन्नति करता है इस दृष्टिकोण से सामाजिक शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास माना गया है

9) वातावरण का ज्ञान (Knowledge of the Environment)

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन उसका वातावरण से प्रभावित होता है

(10) तर्क एवं चिन्तन शक्ति का विकास
Development of the Power of Logical Thinking) → सामाजिक अध्ययन छात्र के सम्मुख अनेकों ठोस तथ्यों को प्रस्तुत करता है

अतः अन्त में, हम शिक्षा आयोग (1964-66) के प्रतिवेदन के शब्दों में कह सकते हैं- "सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों को उनके वातावरण सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने, मानवीय सम्बन्धों की समझ और ऐसे अभिमत तथा मूल्यों में सहायक होने से है, जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में विवेकपूर्ण ढंग से भाग लेने के लिये उपयोगी है। भारत में अच्छी नागरिकता तथा भावात्मक एकीकरण की स्थापना के लिये सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अनिवार्य है।"

भारत में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य

(i) भारत में विभिन्न जातियों के मनुष्य रहते हैं और उनकी विभिन्न भाषाएँ हैं इस प्रकार इस विषय का प्रमुख लक्ष्य छात्रों में विभिन्न धर्मों भाषाओं तथा जातियों के लिये आदर तथा सम्मान की भावना विकसित करना होना चाहिये।